

गुरु नानक – सबद ८
तीरथ नावा जे तिस भावा विण भाणे कि नाइ करी ॥
जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २

तीरथ नावा जे तिस भावा विण भाणे कि नाइ करी ॥
जेती सिरठ उपाई वेखा विण करमा कि मिलै लई ॥
मत विच रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरा इक देह बुझाई ॥
सभना जीआ का इक दाता सो मै विसर न जाई ॥६॥

सार: सचेतना एक परिवर्तनकारी यात्रा हो सकती है जो आलोचनात्मक सोच को निर्देशित करती है और करमों के प्रति जागरूकता बढ़ाती है। यह आत्म-चेतना को बढ़ावा देती है और केवल पारंपरिक प्रथाओं के पालन करने से अधिक आध्यात्मिक विकास से जोड़ती है।

तीरथ नावा जे तिस भावा विण भाणे कि नाइ करी ॥
अगर रस्म-पालन की पाबंदी अच्छाई का रास्ता दिखा सकती है तो इसका पालन करें; अगर रस्म परस्ती नेकी का साथ नहीं देती है तो उसमें शामिल न हों।

जेती सिरठ उपाई वेखा विण करमा कि मिलै लई ॥
सभी प्राणी प्रकृति द्वारा निर्मित हैं; बिना सचेतना के उन्हें क्या लाभ हो सकता है?

मत विच रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
बुद्धि में बहुमूल्य खजाना होता है जिसकी स्वामित्व तभी प्राप्त किया जा सकता है जब सीखने को अपनाया जाए।

गुरा इक देह बुझाई ॥
वह ज्ञान जो अज्ञानता के अंधकार को दूर करता है, वही एकता की जागरूकता का प्रकाश प्रदान करता है।

सभना जीआ का इक दाता सो मै विसर न जाई ॥६॥

सभी प्राणियों का रचयिता एक ही है और मुझे इस सच को नहीं भूलना चाहिए।

(६)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि सचेतना का अभ्यास करने से परस्पर जुड़ाव गहरा होता है। यह सच्ची और असली आत्म की खोज करने और एकता के दिव्य अलौकिक सार से जुड़ने में मदद करता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com